वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 292 | सोमवार 19 फरवरी 2024 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

आचार्य विद्यासागर को राजस्थान के नेताओं ने दी श्रद्धांजलि

किशनगढ़ में 105 डिग्री बुखार में भी पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव में किया था विहार

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन समाज का सूरज अस्त, जीते अरिहंत स्वरूप आचार्य विद्यासागर का समाधिमरण। शहर के जैन समाज के प्रमुख संगठनों की ओर से दी गई विनयांजलि। आचार्य का वर्ष 1975 में जयपुर में रहा प्रवास

दिगंबर जैन धर्म के सबसे बड़े संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर (78) का रविवार देर रात समाधिमरण हुआ। इस खबर के बाद देश विदेश के जैन समाज सहित कई समाज में शोक की लहर फैल गई। रविवार को आचार्य की देह पंचतत्व में विलिन हो गई। इस दौरान आचार्य के दर्शनों के लिए जयपुर सहित लाखों की संख्या में देशभर से समाजजन तीर्थ स्थल पहुंचें। जयपुर में भी आचार्य को श्रद्धांजलि दी गई। जवाहर नगर स्थित माहेश्वरी पब्लिक स्कूल के तक्षशिला सभागार में हुए संत समागम में भी देश विदेश से आए संतों ने संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर को याद करते हुए दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी। संतो ने आचार्य के जीवन पर चर्चा भी की। संत बोले- उनके आदर्श और विचार सदैव सभी का मार्गदर्शन करते रहेंगे। शहर के प्रमुख जैन समाज के संगठनों ने आचार्य के समाधिमरण को समाज की बड़ी क्षति बताया। साथ ही विनयांजलि सभाएं और णमोकार महामंत्र के जाप हुए। बता दे कि आचार्य बीते कई दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। वे संघ के साथ छत्तीसगढ़ डोंगरगढ़ स्थित चंद्रगिरि तीर्थ में विराजमान थे। तीन दिन पहले उन्होंने सल्लेखना

ले लिया। राजस्थान में आचार्य का साल 1968 में मुनि दीक्षा के बाद सात चातुर्मास हुए। जयपुर जिले के किशनगढ़ रेनवाल कस्बे में मुनि के रुप में वर्ष 1970 में तीसरा चातुर्मास हुआ था। ज्ञानार्जन के लिए आचार्य ज्ञान सागर के पास साल 1967 में किशनगढ़ मदनगंज पहुंचें। इससे पहले मुनि अवस्था में महावीर जी से बामनवास होते हुए लालसोट पहुंचें। दौलतपुरा होकर कोटखावदा पहुंचे। कोटखावदा से पदमपुरा होते हुए जयपुर आए। लालजी सांड का रास्ता स्थित दिगम्बर जैन मंदिर छोटा दीवान जी और मंदिर भौसान में मुनि अवस्था में अपने संघ के साथ साल 1969-71 के दौरान प्रवास किया।

सोशल मीडिया पर राजस्थान के नेताओं ने संवदेना की व्यक्त

आचार्य के समाधिमरण के बाद से सोशल नेटवर्क पर राजनीतिक शख्सियतों ने संवेदना जाहिर की। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी, पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट सहित अन्य शख्सियतों ने संवेदना जाहिर की। अतिशय क्षेत्र बाड़ा पदमपुरा में आचार्य की सल्लेखना पूर्वक समाधि हो जाने पर विनयांजलि सभा हुई। इस दौरान आचार्य की जीवनी के बारे में बताया। जैन सहित अन्य समाजजन शामिल हुए। इधर अतिशय क्षेत्र महावीर जी मंदिर कमेटी अध्यक्ष सुधांशु कासलीवाल, वरिष्ठ पत्रकार प्रवीण चंद छाबड़ा, राजस्थान जैन युवा सभा के अध्यक्ष सुभाष चंद जैन, मुनि संघ सेवा समिति के राजीव जैन, मनीष बैद, प्रदीप जैन, विनोद जैन, जेके जैन, रूपेंद्र छाबड़ा, अनिल छाबड़ा सहित अन्य ने कहा कि आचार्य विदयासागर ज्ञान, त्याग ओर तपोबल के सागर थे।

संत शिरोमणी विद्यासागरजी का समाधि देवलोक गमन

पूरे देश में दिगम्बर जैन समाज के प्रवर्तक संत शिरोमणी एवं सत्य कर्म सहित अहिंसा के प्रचार में अपना पूरा जीवन लगाने वाले संत शिरोमणी विद्यासागर जी महाराज का समाधि अवस्था में शनिवार की देर रात ढाई बजे देवलोकगमन हो गया। इस समाचार से अजमेर के जैन समाज में शोक व्याप्त हो गया। समाज के लोगों ने अपने प्रतिष्ठानों को बंद कर उन्हें विनयाजंलि अर्पित की। संत शिरोमणी विद्यासागरजी महाराज का शनिवार की रात ढाई बजे छतीसगढ के रत्नगिरी तीर्थ के डांगरगढ़ में देवलोक गमन हुआ। वे कुछ समय से बीमार थे और पिछले तीन दिनों से अन्न जल त्याग कर समाधि अवस्था में चले गए थे। उनके देवलोकगमन की खबर अजमेर पहुंचते ही जैन समाज में शोक की लहर व्याप्त हो गई। जैन समाज के लोगों ने अपने प्रतिष्ठान बंद करके उन्हें विनयांजलि अर्पित की। साथ ही उनके तीर्थंकर की श्रेणी में शामिल होकर समाज के मार्ग को प्रशस्त करने की कामना की। विशेष उल्लेखनीय है कि संत विद्यासागर जी ने सन् 1068 में 22 वर्ष की आयु में अजमेर में ही संत की दीक्षा ली थी।

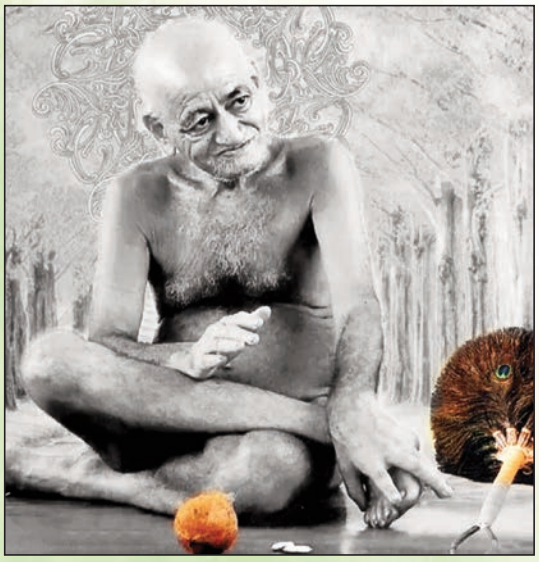

आचार्य श्री की विन्यांजलि प्रकाशित करवाएं

परम आदरणीय बंधुओ सादर जय जिनेन्द्र

पूज्यनीय आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

की समाधि दिनाक 18 फरवरी को हो गई है।
शाबाश इंडिया ई पत्रिका के मंगलवार, 20 फरवरी 2024 के
अंक में अपनी श्रद्धांजलि प्रकाशित करवाकर उन्हें अपने शब्दों
में विन्यांजलि देनें का अवसर प्राप्त करें...

शाबाश इंडिया @ 94140 78380, 92140 78380

shabaasindia@gmail.com, weeklyshabaas@gmail.com

अद्भुत गुरु के अद्भुत शिष्य आचार्य श्री विद्यासागर जी

प्रसंगः स्मृति शेष

डॉ. जैनेंद्र जैन

भारत भूमि मुनियों, संतों, महात्माओं, आचार्यों की भूमि रही है और सभी की सत्य अहिंसा समता, जीयो और जीने दो, वसुधैव कुटुंबकम का भाव जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हम सबका यह परम सौभाग्य है कि इस युग के विश्व विख्यात महान तपस्वी एवं श्रमण संस्कृति के महामहिम संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज हम सबके बीच साधना रत रहे और उनका आशीर्वाद भी हम सबको प्राप्त हुआ। आचार्य श्री का जन्म 10 अक्टूबर 1946 शरद पूर्णिमा के दिन कर्नाटक राज्य के बेलगांव जिले के ग्राम सदलगा में श्रावक श्रेष्ठी मलप्पाजी अष्टगे और श्रीमती श्रीमंती जी के घर आंगन में बालक विद्याधर के रूप में हुआ था। मात्र 14 वर्ष की अल्पायु में विद्याधर आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज के प्रवचन सुनकर भाव विभोर हो जाते थे। 20 वर्ष की उम्र में आपने आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर गृह त्याग का संकल्प कर लिया और आचार्य श्री के समक्ष अपनी भावना व्यक्त कर एवं उनका आशीर्वाद एवं निर्देश पाकर विद्याधर जैन दर्शन के मर्मज्ञ और संस्कृत, प्राकृत एवं हिंदी के अध्येता एवं अनुभव और आयु समृद्ध अद्भुत भविष्यवेत्ता मुनि श्री ज्ञान सागर जी की शरण में अजमेर पहुंच गए और उसी दिन से उनके जीवन की दशा और दिशा बदल गई थी। मुनि ज्ञान सागर जी ने ब्रह्मचारी विद्याधर के भीतर पनप रहे वैराग्य को भांप लिया था और

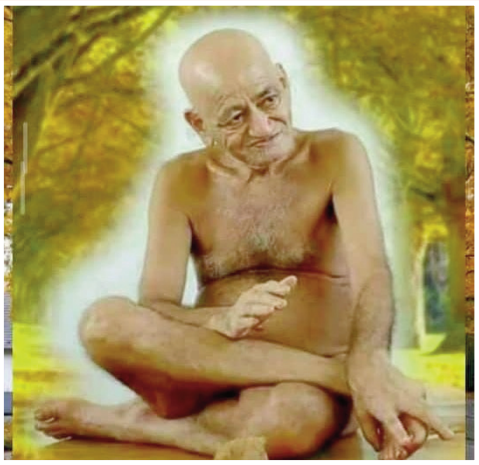

आशीर्वाद देकर अपने संघ में रहने की अनुमति प्रदान कर दी, उसी दिन से विद्याधर ने मुनि ज्ञान सागर जी के समक्ष आजीवन वाहन का त्याग कर दिया और डेढ़ वर्ष तक ज्ञान सागर जी के संघ में रहते हुए विधिवत साधना और अध्ययन में लीन रहकर धर्म, दर्शन, न्याय, व्याकरण और साहित्य सृजन की सारी सीढ़ियां पार कर महाव्रत के दुर्गम शिखर तक पहुंच गए थे। दिनांक 30 जून 1968 को अजमेर की पावन धरा पर 22 वर्ष की उम्र में मुनि ज्ञान सागर जी ने ब्रह्मचारी विद्याधर को जैनेश्वरी मुनि दीक्षा प्रदान कर विद्यासागर बना दिया एवं 22 नवंबर 1972 को नसीराबाद राजस्थान में आचार्य ज्ञानसागर जी ने अपने अद्भुत सुयोग्य शिष्य मुनि विद्यासागर की चरण वंदना करते हुए अपना आचार्य पद भी उन्हें सौंप दिया था जो इतिहास में अपने ढंग का अनूठा और दुर्लभ तम उदाहरण है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज कोई सामान्य संत नहीं थे

वे एक गांधीवादी विचारधारा से ओतप्रोत एक निरभिमानी, निस्पृही, निश्छल राष्ट्र संत थे, जिन पर हमारी संस्कृति, समाज और राष्ट्र गौरव करता था ।लगभग 5 दशक से अधिक समय तक उन्होंने पद त्राण विहीन चरणों से पद बिहार करते हुए त्याग, तपस्या, ज्ञान ,साधना और अपनी करुणा की प्रभा से न केवल जैन क्षितिज को आलोकित किया वरन जिन शासन की ध्वजा को भी दिग- दिगंत तक फहराकर उसका शीर्ष भी ऊंचा किया। आपके दीक्षा गुरु ज्ञान सागर जी श्रमण संस्कृति के उद्भट विद्वान और यथा नाम तथा गुण थे और आप भी उनके यथा नाम तथा गुण ऐसे अद्भुत शिष्य थे जो धर्म और अध्यात्म के प्रभावी प्रवक्ता एवं श्रमण संस्कृति की उस परमोज्वल धारा के अप्रतिम प्रतीक थे जो आज भी सिंधु घाटी की प्राचीनतम सभ्यता के रूप में अक्षुण होकर समस्त विश्व को अपनी गौरव गाथा सुना रही है। आचार्य श्री ने धर्म ,समाज, संस्कृति, साहित्य, नव तीर्थ सृजन, गोरक्षा, जीव दया, चिकित्सा एवं स्त्री शिक्षा और हथकरघा के क्षेत्र में जो अवदान दिया है वह वर्णनातीत और स्वर्ण अक्षरों में अंकित किए जाने योग्य है। उन्होंने अभी तक 450 से अधिक ऐलक, क्षुल्लक, मुनि, एवं आर्यिका दीक्षा प्रदान कर श्रमण परंपरा को भी वृद्धिगत एवं गोरवान्वित किया।

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के समाधि से आगरा में शोक की लहर

आगरा. शाबाश इंडिया। जैन धर्म के वर्तमान के महावीर स्वामी संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के समाधि की खबर से समूचे आगरा सकल जैन समाज में शोक की लहर दौड़ गई है। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने देर रात ढाई बजे छत्तीसगढ़ के डोंगरागढ़ स्थित चंद्रगिरी तीर्थ में तीन दिन उपवास के बाद बीत रात ढाई बजे देह त्यागी। जैन मुनि विद्यासागर जी महाराज को जैन समाज का सबसे बड़ा जैन मुनि माना जाता है। आगरा सकल दिगम्बर जैन समाज के प्रदीप कुमार जैन पीएनसी एवं मनोज जैन बाकलीवाल का कहना है कि आज संपूर्ण जैन समाज व जैनोत्तर समाज के लिए बड़ा शोक का दिन है। परम पूज्य युगश्रेष्ठ दिगंबराचार्य जन-जन के गुरुवर विद्यासागर जी महाराज की समाधि संलेखना की खबर बहुत बेदनीग है। जैन धर्म की कभी न पूर्ण होने वाली वह इति है। मीडिया प्रभारी शुभम जैन ने बताया कि 10 अक्टूबर 1946 को कर्नाटक के बेल्लूरु जिला के चंद्रलगा गांव में उनका जन्म हुआ था। पिता मलप्पा और मां का नाम श्रीमंती था, उन्हें अजमेर में दीक्षा आचार्यश्री ज्ञानसागर जी महाराज द्वारा दी गई थी। आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने चार दशक पूर्व फिरोजाबाद में चातुर्मास किया था। इस दौरान वह आगरा होकर गुजरे तो लाखों भक्त उनके साथ गए थे। आगरा में उनके हजारों की संख्या में अनुयायी है।

जैन सौरभमय पाठशाला के बच्चों ने नम आंखों से दी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज को विनयांजलि

जयपुर. शाबाश इंडिया

प्रतापनगर के श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सेक्टर 8 में गणिनी आर्यिका विषेशमति माता के सानिध्य में जैन सौरभमय पाठशाला के बच्चो ने दो मिनट मौन रहकर संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज को विनयांजलि दी। समाज के पूर्व अध्यक्ष जिनेन्द्र जैन जीतू ने बताया कि संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महामुनिराज की माघ शुक्ल नवमी रविवार 18 फरवरी को 2:35 (17 फरवरी को रात्रि में) मध्यरात्रि में समाधि हो गई। आचार्य श्री को ब्रह्म में लीन होने की सूचना मिलते ही देश विदेश के जैन समाज में शोक की लहर फैल गई। श्री शांतिनाथ युवा मंडल अध्यक्ष त्रिलोक चंद जैन ने बताया कि आचार्य श्री ने विधिवत सल्लेखना पूर्वक 3 दिन का उपवास ग्रहण कर अखण्ड मौन धारण कर लिया था पूर्ण जाग्रत अवस्था में आचार्य पद का त्याग कर प्रथम मुनि शिष्य निर्यापक श्रमण समय सागर महाराज को आचार्य पद देने की घोषणा की थी।

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा (बाड़ा) प्रबंध समिति द्वारा भावपूर्ण विनयांजलि

पदमपुरा, जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा (बाड़ा) प्रबंध समिति द्वारा युगद्दष्टा, राष्ट्रहित चिंतक, संत शिरोमणि, आचार्य प्रवर श्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज की सम्यक समाधि होने पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। क्षेत्र कमेटी के मानद् मंत्री हेमन्त सौगाणी ने बताया कि आज की श्रधांजलि सभा के प्रारम्भ में क्षेत्र कमेटी के संरक्षक ज्ञान चंद झांझरी ने आचार्य श्री के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर सभा का शुभारंभ किया। कार्यक्रम का संचालन पं.अनिल कुमार जैन शास्त्री ने करते हुए आचार्य श्री की जीवनी पर प्रकाश डाला। सभा में आचार्य श्री से जुड़े संस्मरण सुनाते हुए ज्ञान चंद झांझरी, महावीर प्रसाद पाटनी(गोनेर वाले),क्षेत्र कमेटी के कोषाध्यक्ष राजकुमार कोठ्यारी, संयुक्त मंत्री जितेंद्र मोहन जैन, उपाध्यक्ष सुरेश चन्द काला आदि ने श्रृद्धा सुमन अर्पित किए। इस अवसर डा. ज्ञान चन्द जैन, नरेन्द्र पांण्डया, संतोष रांवका, कैलाश चंद सौगाणी, चौथमल बड़जात्या, योगेश टोडरका सहित दिगम्बर जैन समाज बाड़ा पदमपुरा के साधर्मी महिला पुरुष, एवं क्षेत्र के कर्मचारी, काफी संख्या में उपस्थित लोगो ने आचार्य भगवन के चरणों में शत् शत् नमन, वंदन, कर भावपूर्ण विनयाञ्जलि अर्पित की।

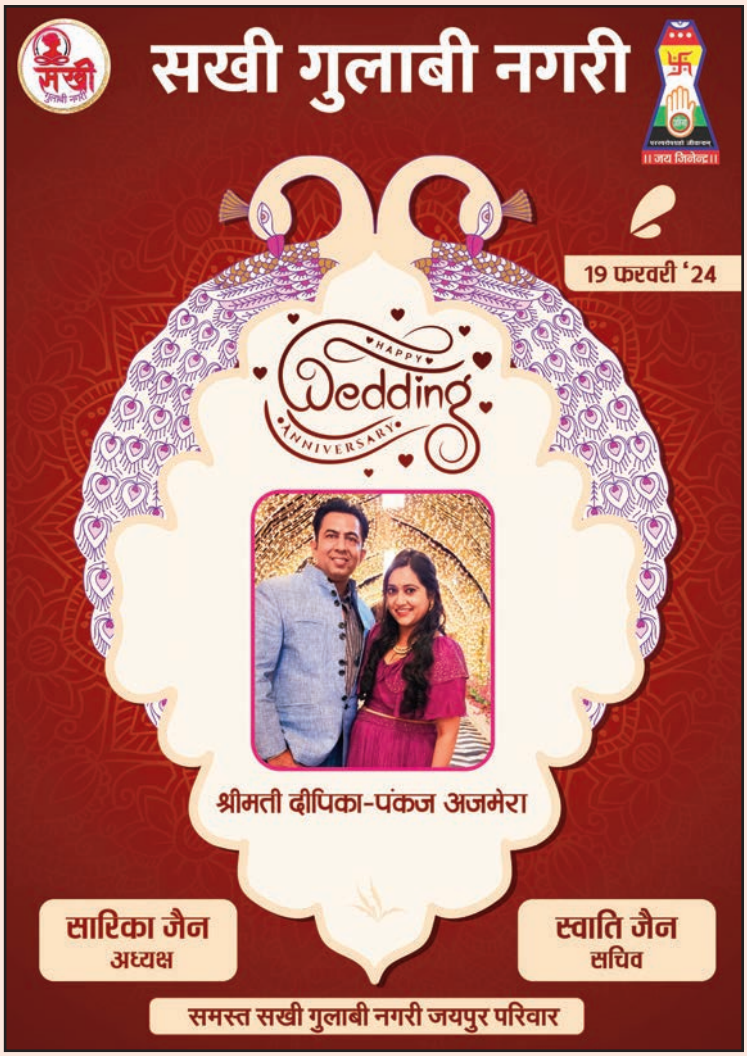

वेद ज्ञान

मन के कहने पर ही मनुष्य हर काम करता है

मन की यात्रा अधूरी ही होती है। वैसे तो आदमी जीता पूरा है और पूरी तरह से जीने का प्रयास करता है, पर वह जी नहीं पाता। ऐसा इसलिए, क्योंकि वह जीने के लिए प्रयास करता है। उन प्रयासों में वह कुछ संभावनाओं में डूबकर जीता है। कुछ कल्पनाओं में डूबकर जीता है और कभी-कभी स्वप्न में इस तरह खोकर जीता है, जैसे उसका यही सत्य है। यही जीवन है। आदमी का यह मन ही तो है। मन जो मान लेता है, उसी की यात्रा करने लगता है। उसी के नशे में डूबकर कुछ समय काट लेता है। मन सभी चीजों को स्वीकार कर लेता है। मन सभी तरह की बातों को बर्दाश्त कर लेता है। वह केवल अपना रास्ता खोजता रहता है। वह खाने में, पीने में, सोने-जागने में भी अपना प्रभाव रखता है। इसलिए आदमी पूरी तरह से सो भी नहीं पाता। सोकर भी वह स्वप्न में खो जाता है। सोकर वह यात्राएं करने लगता है। स्वप्न में ही उठकर चलने लगता है। स्वप्न में ही मन के भटकाव को मुक्ति देने का प्रयास करता है और कभी-कभी तो सो भी नहीं पाता। पूरी रात स्वप्नों में ही गुजार देता है। वैसे तो मनुष्य पूरी व्यवस्थाओं के साथ जन्म लेता है। जब वह जन्म लेता है तो मां के स्तन में दूध आ जाता है और प्रेम के अनुग्रह का अथाह सागर उसके लिए उमड़ पड़ता है, पर जैसे-जैसे उसकी दुनिया बढ़ती जाती है। वह अपने जीवन के प्रश्नों के समाधान में उलझ जाता है। आदमी की मांग बढ़ती जाती है। प्रश्नों का चक्रव्यूह बढ़ता जाता है। चाहतें बढ़ने लगती हैं। समाधान की खोज में यात्राएं होती रहती हैं। किसी स्थूल यात्रा को वह पूरा कर लौट आता है। तो किसी में उलझ कर छोड़ आता है। आदमी के प्रश्न भी अनेक तरह के हैं और समाधान के मार्ग भी भिन्न तरह के हो जाते हैं। आदमी की कई तरह की चाहतें हैं। अनेक तरह से प्रेम करता है। कोई प्रेमिका के प्रेम में या किसी प्रेमी के प्रेम में खोकर अपना स्वर्ग समझ लेता है। इसी को अपनी जिंदगी समझ लेता है। तो कोई धन से प्यार करता है, कोई पद प्रतिष्ठा से तो कोई कला से प्रेम करने लगता है। इस प्रकार मन के कहने पर वह हर काम करता है, लेकिन बाद में उसे यह अहसास होता है कि मन के कहने पर वह जो भी करता है, अंततः हाथ कुछ नहीं आता। मन की नीरसता व रिक्तता दूर नहीं होती।

संपादकीय

एआई इकोनॉमी में मानवीयता की कद्र कहीं ज्यादा रहेगी

सदियों में कुछ ही मौके ऐसे आए हैं जब हमने उन स्किल्स में व्यापक बदलाव होते देखा है, जिन्हें अर्थव्यवस्था में सबसे ज्यादा महत्व दिया जाता है। हम ऐसे ही एक दौर में प्रवेश कर रहे हैं। तकनीक और डेटा कौशल, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की प्रगति के कारण सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। लेकिन अन्य कौशल, विशेष रूप से इंसानों के कौशल जिन्हें लंबे समय तक सॉफ्ट स्किल मानकर कम आंका जाता रहा है,

संभवतः सबसे ज्यादा टिकाऊ बने रहेंगे ये एक आशाजनक संकेत है कि एआई से काम की एक ऐसी दुनिया शुरू हो सकती है जो मानवीय क्षमता पर कम नहीं बल्कि और ज्यादा आधारित होगी। एआई क्या-क्या कर सकता है? इसके शुरूआती संकेत हमें बतौर प्रजाति अलग ढंग से सोचने पर मजबूर कर रहे हैं। प्रभावी ढंग से संवाद करने, सहानुभूति पैदा करने और गंभीरता से सोचने की हमारी क्षमताओं ने मनुष्यों को सहस्राब्दियों तक एक-दूसरे का सहयोग करने और नवाचार करने में मदद की है। ये ऐसे कौशल हैं जो हम सभी में हैं और जिन्हें बेहतर किया जा सकता है, फिर भी इन्हें हमारी अर्थव्यवस्था, शिक्षा या प्रशिक्षण में कभी तवज्जो नहीं दी गई। अब इसे बदलना होगा। आज छात्र अच्छी नौकरी पाने के लिए तकनीकी कौशल पर जोर देते हैं। दशकों से हम उन अच्छी नौकरियों को भविष्य में भी सुरक्षित और ज्यादा वेतन देने वाली मानते रहे हैं, जो तकनीक पर आधारित रही हैं। यही कारण है कि कंप्यूटर विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी में चार साल की डिग्री करने वाले छात्रों की संख्या 2018 और 2023 के बीच 41% बढ़ गई, जबकि मानविकी (ह्यूमैनिटीज) के छात्र घटे हैं। फिर एआई की शक्तियां आई। लिंक्डइन ने हाल में 500 ऐसी नौकरियों की पहचान की है, जिनपर जनरेटिव एआई का असर पड़ेगा। उनकी रिसर्च के मुताबिक 96% सॉफ्टवेयर इंजीनियरों के मौजूदा कौशल की जगह एआई ले सकता है। लीगल एसोसिएट, फाइनेंस ऑफिसर जैसी नौकरियों को भी खतरा है। एआई का हम सभी के काम पर कुछ न कुछ असर जरूर पड़ेगा। सवाल उठता है, बतौर इंसान हमारी मुख्य क्षमताएं क्या हैं? अगर हम एआई के युग के खौफ को ध्यान में रखकर जवाब खोजेंगे तो इंसानी क्षमताओं की कमजोर तस्वीर बनेगी। इसके बजाय, यह जरूरी है कि हम यह सोचें कि एआई के दौर में इंसानों के लिए क्या-क्या संभावनाएं हैं तब हमारा ध्यान इंसानी कौशलों पर जाएगा, जिनसे हम मिलकर काम करते हैं। और नवाचार करते हैं। कुछ तरह से, जैसा तकनीक नहीं कर सकती। आज लिंक्डइन पर सभी नौकरियों में कम्युनिकेशन पहले से ही सबसे ज्यादा मांग में रहने वाला कौशल है। यहां तक कि एआई के विशेषज्ञों को भी एआई के साथ अच्छी तरह से काम करने के लिए इस कौशल की जरूरत है। पिछले साल लिंक्डइन पर 70% से ज्यादा अधिकारियों ने कहा कि उनके संगठनों के लिए उच्च तकनीकी एआई कौशल की तुलना में सॉफ्ट स्किल्स ज्यादा महत्वपूर्ण थे। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

वित्तीय अविश्वास

आर्थिक उदारीकरण के दौर में वित्तीय सेवाओं का सुगम और पारदर्शी होना एक बुनियादी जरूरत है। इसी पृष्ठभूमि में भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने पेटीएम पेमेंट्स बैंक लिमिटेड को फास्टैग सेवा के लिए 30 अधिकृत बैंकों की सूची से हटाकर तमाम वित्तीय संस्थाओं को पारदर्शिता बरतने के लिए जो संदेश दिया है, वह स्वागत-योग्य है। किसी भी कंपनी को अपने नियामक के अनुरूप ही काम करना चाहिए, मगर ऐसा लगता है कि निशाने पर आए पीटीएम ने कहीं न कहीं कोताही बरती है और इसीलिए उसे कार्रवाई का सामना करना पड़ रहा है। ध्यान देने की बात है कि अब पूरे देश में फास्टैग सुविधा की व्यवस्था हुई है, जिसका लाभ प्रतिदिन करोड़ों लोगों को होता है। देश भर में स्थित साढ़े आठ सौ से ज्यादा टोल गेट या टोल नाकों या टोल प्लाजा से जितने भी लोग गुजरते हैं, उन्हें नकदी रखने की मजबूरी से मुक्ति मिल चुकी है और ज्यादातर टोल गेट पर जेब टटोलने या वाहन से बाहर हाथ निकालने और खुदरा पैसों के लिए बहस करने की जरूरत नहीं रह गई है। यात्रा का आनंद बढ़ा है। हालांकि, इसमें कोई दोराय नहीं कि फास्टैग को सफल बनाने में पेटीएम की भी भूमिका रही है, पर अब जो समस्या खड़ी हुई है, उससे निपटने के लिए खुद इस कंपनी को बड़ी पहल करनी पड़ेगी। इस कंपनी के क्रिया-कलापों से भारतीय रिजर्व बैंक प्रसन्न नहीं है और उसने 31 जनवरी को पेटीएम पेमेंट्स बैंक पर व्यावसायिक प्रतिबंध लगाए हैं। इस कंपनी को कहा गया है कि उसका बैंक 29 फरवरी के बाद कोई जमा स्वीकार न करे और कर्ज लेन-देन भी न करे। इस कंपनी को पहले ही चेत जाना चाहिए था, भारतीय केंद्रीय बैंक ने मार्च 2022 में ही उसके बैंक को नए ग्राहक जोड़ने से रोक दिया था। भारतीय रिजर्व बैंक की मर्जी से ही देश में तमाम वित्तीय संस्थाओं को काम करना चाहिए और किसी भी संस्था को मनमानी करने की इजाजत नहीं दी जा सकती। जो कंपनी नियमों की पालना नहीं कर रही है, उसे कारोबार से रोकना गलत नहीं है और इसी दिशा में राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने कदम उठाया है। यह डिजिटल का दौर है और इस दौर में विश्वसनीयता की जरूरत ज्यादा बढ़ गई है। लोग लाखों रुपये का आदान-प्रदान एक क्लिक या एक बटन से करने लगे हैं। यह बात भी किसी से छिपी नहीं है कि डिजिटल के विस्तार के साथ ही, धोखाधड़ी की आशंकाएं भी बढ़ी हैं। धोखाधड़ी में साइबर लुटेरे ही नहीं, बल्कि बड़ी संस्थाएं भी लगी हुई हैं। वित्तीय मोर्चे पर ज्यादा सुविधा दरअसल लोगों को लापरवाह भी बना देती है और अक्सर लोभी प्रवृत्ति के लोगों के साथ ठगी हो जाती है। अतः अगर कोई संस्था बैंकिंग क्षेत्र में सेवा देना चाहती है, तो उसे पूरी तरह से चाक-चौबंद होकर ही बाजार में उतरना चाहिए। बैंकिंग क्षेत्र का विगत वर्षों में बहुत विस्तार हुआ है, अनेक कंपनियां बैंकों की तरह व्यवहार या कारोबार करने लगी हैं, पर क्या उन्हें पूरी तरह से जिम्मेदार बनाए रखने के इंतजाम पर्याप्त हैं? भारत में बैंकिंग धोखाधड़ी को लेकर ज्यादा चिंता स्वाभाविक है। वित्तीय वर्ष 2023 में बैंकिंग प्रणाली में कुल 13,530 धोखाधड़ी के मामले दर्ज किए गए हैं। कुल रिपोर्ट किए गए धोखाधड़ी के मामलों में से लगभग 49 प्रतिशत डिजिटल भुगतान-कार्ड/इंटरनेट श्रेणी के अंतर्गत आते हैं। अतः डिजिटल आधारित बैंकिंग की दुनिया में सौ फीसदी विश्वसनीयता बनाकर ही हमें आगे बढ़ना चाहिए।

मुझे तो फौजी बनना था: जयदीप अहलावत

उदयपुर. शाबाश इंडिया

हरियाणा के रोहतक शहर के बीचों-बीच एक बड़ा ही खूबसूरत पार्क है, जिसका नाम है- मानसरोवर पार्क। जहां के ओपन ऑडिटोरियम में अक्सर बड़े-बड़े नाटकों का मंचन होता रहता है। वो शाम मुझे आज भी याद है, जब उस मंच पर ग्रीक राइटर, सोफोक्लीज के नाटक ह्यइडिपसह्न का मंचन हो रहा था। वहीं दर्शक दीर्घा में बड़े-बड़े कलाकारों के बीच एक ऐसा नौजवान भी बैठा था, जिसका आर्मी ऑफिसर बनने का सपना लगभग टूट चुका था। अगर बहुत कम शब्दों में कहा जाए तो इडिपस नाटक का सारांश यही था कि जो भाग्य में लिखा होता है, उसे कोई नहीं बदल सकता.....और शायद नाटक को देखकर वहां बैठे उस नौजवान के भाग्य ने भी करवट लेना शुरू कर दिया था। वो इस नाटक से इतना प्रभावित हुआ कि नाटक समाप्त होते ही वो इसके निर्देशक सुनील चितकारा से मिला और उन्हें अपना गुरु बनाकर, उनसे अभिनय का प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया। हमारे देश में गुरुओं की महिमा कुछ ऐसी रही है कि अगर उनका वरद हस्त किसी के सिर पर पड़ जाए तो एक सामान्य बालक, राजा चंद्रगुप्त और एक सूत पुत्र, महारथी कर्ण बन जाता है। इस नौजवान के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ, मंझे हुए रंगकर्मी सुनील चितकारा के मार्गदर्शन में उसने अभिनय के तमाम गुर सीखे, फिल्म इंस्टीट्यूट, पुणे से अभिनय की पढ़ाई की और जा पहुंचा माया नगरी मुंबई। खट्टा-मीठा, आक्रोश, चटगांव और रॉकस्टार जैसी फिल्मों में छोटी-छोटी भूमिकाएं करने के बाद उसे अनुराग कश्यप की फिल्म ''गैंग्स ऑफ वासेपुर'' में एक बड़ा ब्रेक मिला और दुनिया ने इस मंझे हुए अभिनेता को जयदीप अहलावत के रूप में जाना। इसके बाद कमांडो, विश्वरूपम, गब्बर इज बैक, रईस और राजी जैसी फिल्मों में अपने विविध रंगी अभिनय से इन्होंने अपने आप को बॉलीवुड में एक सशक्त अभिनेता के रूप में स्थापित कर दिया।

नेत्र शिविर में 184 मरीजों की जांच की गई

जयपुर. शाबाश इंडिया

शेखावाटी अग्रवाल समाज संस्था के तत्वावधान में व संजय एंड ज्योति अग्रवाल फाउंडेशन के सौजन्य से 134 वां निशुल्क लैंस प्रत्यारोपण शिविर रविवार को विद्याधर नगर, सेक्टर-7 स्थित महाराजा अग्रसेन हॉस्पिटल में आयोजित किया गया। इस मौके पर 186 मरीजों ने आंखों की जांच व 96 व्यक्तियों को चश्में वितरण किए गए। संस्था के सदस्य नथमल बंसल ने बताया कि इस दौरान 23 व्यक्तियों का ऑपरेशन के लिए चयन किया गया। इस मौके पर संजय एण्ड ज्योति अग्रवाल फाउंडेशन के प्रतिनिधि कमलनयन बागला, अनिल कुमार सिंगडोदिया , बजरंग लाल गर्ग, विनोद कुमार बजाज, सुरेश सिंगडोदिया, सुरेश भूतिया, राजेश चौधरी , मुकेश मीणा व राजेंद्र सिंह मौजूद रहे।

अन्तर्मना की प्रेरणा से कुंजवन में देश का पहला ''गजनिया निवास' हाथी घर बना

अयोध्या की तर्ज पर जगमग हुए जिनालय, तपश्वि सम्राट की स्वर्ण प्रतिमा विरातजित हुई, 3 साल का काम करीब 90 दिनों में संम्पन कर तीर्थ नवीनीकरण किया

सोनकच्छ. शाबाश इंडिया

जीव दया और करुणा का नया धाम कुंजवन उदगाँव महाराष्ट्र श्री ब्रमनाथ पुरातन दिगम्बर जैन मंदिरे में अंतर्मना गुरुदेव आचार्य श्री 108 डॉ. प्रसन्न सागर जी महाराज को ग्लोबल रिकॉर्डस एंड रिसर्च फाउंडेशन द्वारा ग्लोबल आइकॉन अवार्ड से सम्मानित किया गया। जहाँ त्रि-दिवसीय समाधिस्त तपश्वि सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज जी जन्म जयंती महोउत्सव अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर व मुनि पीयूष सागर जी के सानिध्य में मनाया जा रहा है। उक्त आयोजन में स्वर्णिम स्टार्टअप एंड इनोवेशन विश्विद्यालये के विशेष दीक्षांत समारोह में आचार्य श्री को कुलाधिपति डॉक्टर ऑफ लिट्रेचर की मानद उपाधिद्र से भी विभूषित किया गया। इस अवसर पर सम्पूर्ण कुंजवन तीर्थ क्षेत्र का करीब 90 दिनों में नवीनीकरण कर अयोध्या जैसी ''जगमग रोशनी से जिनालय'' पर अद्भुत विधुतसज्जा कर प्रकाश पुंज की तरह जगमग किया। 'अन्तर्मना पुस्तक' के लिए ग्लोबल रिकॉर्डस एवं रिसर्च फाउंडेशन द्वारो आचार्य श्री को ग्लोबल आइकॉन अवार्ड सम्मानित किया। प्रवक्ता रोमिल जैन ने बताया कि अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी जैन धर्म मे शाषन नायक भगवान महावीर के बाद पहली बार

जैन धर्म के सबसे बड़ी सिंह निष्क्रीठित व्रत की उत्कृष्ट साधना सुसंपन्न करने वाले. विश्व के पहले सफल साधक के रूप में आविर्भूत हुए है। व्रत के दौरन शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर जी में 557 दिनों तक अखंड मौन और आत्मस्थ हो कर ध्यान का अभ्यास किया 496 दिनों के निर्जल उपवास का पालन किया और अपने उत्कृष्ट सिंह निष्कृष्ट व्रत के दौरान 61 पारणों के माध्यम से बहुत अल्प मात्रा में आहार और जल लिया। इस समयावधि में एक पुस्तक 'अन्तर्मना' लेखन किया। उक्त पुस्तक में सभी धर्मों का सार है। इस हेतु 'अन्तर्मना पुस्तक' के लिए ग्लोबल रिकॉर्डस एवं रिसर्च फाउंडेशन द्वारो आचार्य श्री को ग्लोबल आइकॉन अवार्ड सम्मानित किया। उक्त उपवास के लिए श्री नर विजय यादव द्वारा एशिया व इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड का सर्टिफिकेट्स भी दिया गया।

देश का पहला गजनीया भवन बना ...

कुंजवन की पावन धरा पर अंतर्मना गुरुदेव प्रेरणा से जीव दया और पशुओं के प्रति अपनी वात्सल्य भावना का मनोहारी उदाहरण प्रस्तुत करते हुये भारत में पहली बार, श्री ब्रह्मनाथ पुरातन दिगंबर जैन मंदिर, कुंजवन उदगांव, कोल्हापुर महाराष्ट्रे भारत में हाथी की देखभाल और भलाई के लिए समर्पित एक अनोखा घर, 'गजनिया निवास', का निर्माण कराया। इस हेतु भी सर्टिफीकेट देते हुए ग्लोबल रिकॉर्डस एवं रिसर्च फाउंडेशन द्वारो आचार्य श्री को ग्लोबल आइकॉन अवार्ड सम्मानित किया। मीडिया प्रभारी रोमिल पाटनी विकल्प सेठी सोनकच्छ नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल औरंगाबाद नितेश पाटणी इचलकरंजी ।

महायज्ञ में आहुतियां देकर विश्व कल्याण एवं गौमाता रक्षा की कामना

हनुमान टेकरी स्थित काठियाबाबा आश्रम पर श्री कामधेनु सुरभि महायज्ञ एवं रासलीला का आयोजन जारी

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। शहर में छोटी हरणी हनुमान टेकरी स्थित काठिया बाबा आश्रम में आयोजित सात दिवसीय भव्य 11 कुण्डीय श्री कामधेनु सुरभि महायज्ञ में पांचवें दिन रविवार को गौमाता की रक्षा, सृष्टि के कल्याण एवं सर्व सुख शांति की कामना के साथ यज्ञवेदी में आहुतियों का दौर जारी रहा। महायज्ञ में आहुति देने के लिए भीलवाड़ा शहर के विभिन्न क्षेत्रों से भक्तगण शामिल हो रहे है। महायज्ञ के साथ श्री राधा रासेश्वरी रासलीला मण्डल श्रीवृन्दावनधाम मथुरा द्वारा भक्तिपूर्ण रासलीला की प्रस्तुति का दौर भी जारी है। सात दिवसीय महायज्ञ आयोजन के पांचवें दिन सुबह 8 बजे महन्त बनवारीशरण काठियाबाबा के सान्निध्य में यज्ञ मण्डप में यज्ञाचार्य आचार्य श्री मुकेश अवस्थी महाराज श्रीधाम वृन्दावन के निर्देशन में यज्ञ अनुष्ठान सम्पन्न हुए। यज्ञाचार्य अवस्थी ने बताया कि सर्वप्रथम सभी यज्ञकर्ताओं को

पवित्रीकरण से पवित्र कर पंचगव्य के प्राशनपूर्वक यज्ञमण्डप में प्रवेश कराया गया। सभी ने अपने-अपने मण्डप पर बैठकर गौमाता के दिव्य मंत्रों से हवन किया। आहवित देवताओं का विधिपूर्वक पूजन करके गौमाता की पूजा की गई। इसके बाद संकल्प विधि द्वारा हवन पूरा कराके आरती,पुष्पांजलि ओर यज्ञ मण्डप की चार प्रदक्षिणा के साथ आरती प्रसाद वितरण के साथ यज्ञ का विश्राम हुआ। पांचवें दिन यज्ञ के मुख्य यजमान रवि अग्रवाल एवं मुख्य अतिथि डॉ. उमाशंकर पारीक थे। यज्ञ में आहुति देने वाले यजमानों में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित 90 वर्षीय सेवानिवृत शिक्षक श्री मदनलाल पारीक भी शामिल थे। यज्ञ में शामिल यजमानों में गजानन्द बजाज, जगदीश सोनी, गोपाल शर्मा, संदीप गोलेछा, गिरीश शर्मा, अनुराग दाधीच, अविनाश गर्ग, जसवंत सोनी, नरेश शर्मा, रोशन सोनी, दिनेश चौधरी, समुद्रसिंह, श्याम जोशी, सुरेन्द्रसिंह आदि शामिल थे। आयोजन के तहत यज्ञ प्रतिदिन सुबह 8 बजे से 12.30 बजे तक हो रहा है। महायज्ञ की पूणार्हुति एवं महाआरती 20 फरवरी मंगलवार को होगी। महायज्ञ की पूणार्हुति पर महाप्रसादी का भी आयोजन किया जाएगा। रासलीला के तहत चौथे दिन शनिवार रात महन्त बनवारीशरण काठियाबाबा के सानिध्य में वृन्दावन से आए कलाकारों द्वारा कृष्ण बाल लीला प्रसंग की भावपूर्ण सजीव प्रस्तुति ने श्रद्धालु भक्तों का मन जीत लिया।

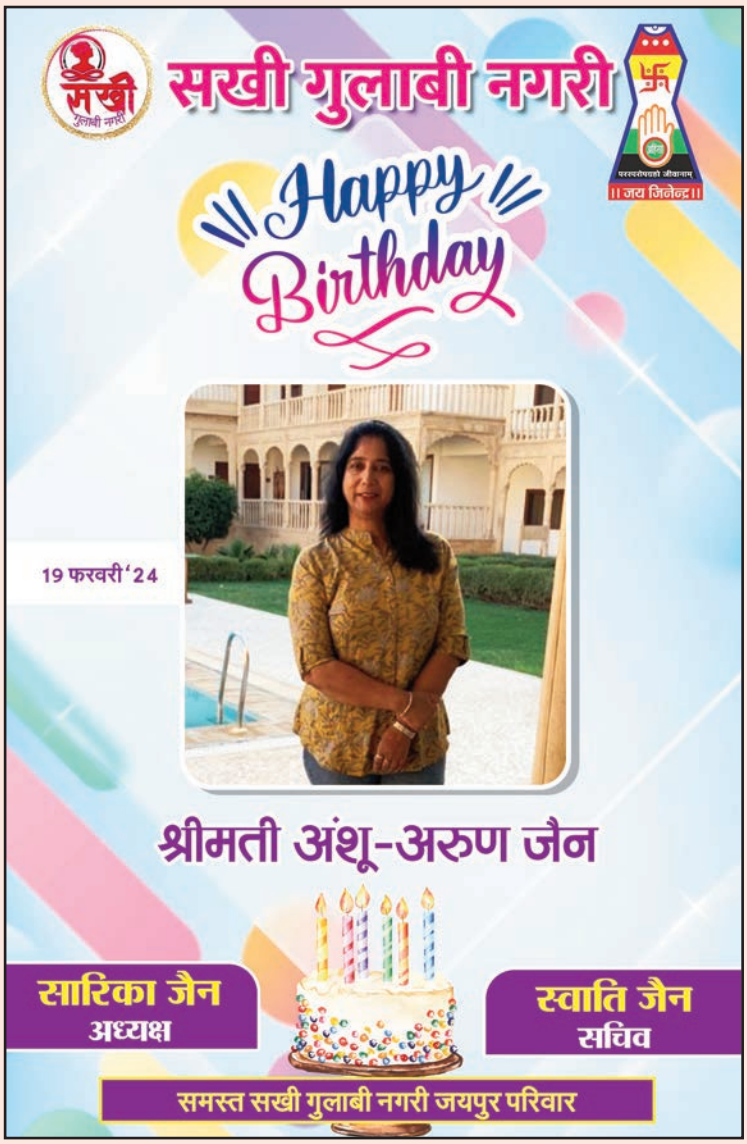

आचार्य भगवन विद्यासागर जी महामुनिराज को अम्बाह जैन समाज ने दी विनयांजलि प्रतिष्ठान रहे बंद

अम्बाह. शाबाश इंडिया

जन-जन के संत परम पूज्य आचार्य भगवन विद्यासागर जी महामुनिराज ने 18 फरवरी की रात 2.30 बजे संल्लेखना पूर्वक समाधि (देह त्याग दी) ले ली। छत्तीसगढ के डोंगरगढ स्थित चन्द्रगिरी तीर्थ पर उन्होंने अंतिम सांस ली, यह समाचार सुनकर अंबाह जैन समाज में शोकमय वातावरण हो गया लोगों ने सुबह मंदिरों में जाकर आचार्य भगवन विद्यासागर जी महाराज को विनयांजलि अर्पित की इसके साथ ही बाजार में जैन समाज के प्रतिष्ठान भी बंद रहे। जानकारी देते हुए विमल जैन भंडारी कुलदीप जैन ने बताया इस खबर से देशभर में शोक की लहर है। आचार्यश्री पिछले कुछ दिन से अस्वस्थ थे। पिछले दो दिन से उन्होंने अन्न जल का पूरी तरह त्याग कर दिया था। आचार्यश्री अंतिम सांस तक चैतन्य अवस्था में रहे और मंत्रोच्चार करते हुए उन्होंने देह का त्याग किया, समाधि के समय उनके पास पूज्य मुनिश्री योगसागर जी महाराज, श्री समतासागर जी महाराज, श्री प्रसादसागर जी महाराज संघ सहित उपस्थित थे। इसलिए जैन समाज और आचार्यश्री के भक्तों ने उनके सम्मान में एक दिन अपने प्रतिष्ठान बंद रखने का फैसला किया है। ओपी जैन ने बताया कि आचार्यश्री का जन्म 10 अक्टूबर 1946 को कर्नाटक प्रांत के बेलगांव जिले के सदलगा गांव में हुआ था। उन्होंने 30 जून 1968 को राजस्थान के अजमेर नगर में अपने गुरु आचार्यश्री ज्ञानसागर जी महाराज से मुनिदीक्षा ली थी। आचार्यश्री ज्ञानसागर जी महाराज ने उनकी कठोर तपस्या को देखते हुए उन्हें अपना आचार्य पद सौंपा था। आचार्यश्री 1975 के आसपास बुंदेलखंड आए थे। वे बुंदेलखंड के जैन समाज की भक्ति और समर्पण से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपना अधिकांश समय बुंदेलखंड में व्यतीत किया।

प्रेस प्रीमियर लीग-2024 का ड्रा निकाला

जयपुर. शाबाश इंडिया। पिंकसिटी प्रेस क्लब की ओर से आयोजित होने वाले पीपीएल-2024 में शामिल होने वाली टीमों का ड्रा रविवार को प्रेस क्लब मीडिया सेन्टर में निकाला गया। क्लब महासचिव एवं लीग संयोजक रामेन्द्र सोलंकी ने बताया कि लीग में 16 टीमें भाग ले रही है। 16 टीमों को चार पूल बनाएं गए। जिसमें पूल-1 में दैनिक भास्कर, प्रेस क्लब रॉयल, समाचार जगत, टाइम्स ऑफ इण्डिया, पूल-2 में सच बेधड़क, दैनिक नवज्योति, नेशनल इलेवन, डीबी डिजीटल, पूल-3 में महानगर टाइम्स, फर्स्ट इण्डिया रेड, न्यूज-18, समाचार प्लस, पूल-4 में फर्स्ट इण्डिया ब्लू, आई टी. चौक, सियासी भारत, जी-राजस्थान शामिल है। लीग का उद्घाटन मैच 20 फरवरी को प्रातः 8.30 बजे मानसरोवर स्थित के.एल.सैनी स्टेडियम में फर्स्ट इण्डिया रेड बनाम न्यूज-18 के बीच खेला जाएगा। उन्होने बताया कि इस बार आरसीए की ओर से आरसीए ग्राउण्ड एवं के.एल.सैनी स्टेडियम मानसरोवर निःशुल्क उपलब्ध करवाया है। इसके लिए आरसीए पदाधिकारियों का आभार व्यक्त किया। लीग ड्रा के अवसर पर क्लब के उपाध्यक्ष विजेन्द्र जायसवाल, राहुल भारद्वाज, कार्यकारिणी सदस्य डॉ. मोनिका शर्मा, पुष्पेन्द्र सिंह राजावत, नमोनारायण अवस्थी, विकास आर्य, उमंग माथुर, ओमवीर भार्गव, दिनेश कुमार शर्मा, पूर्व अध्यक्ष सत्य पारीक, नीरज मेहरा, अभय जोशी, वरिष्ठ पत्रकार सहित सभी टीमों के कप्तान एवं मैनेजर उपस्थित रहे ।

संगिनी मैन उदयपुर द्वारा हेल्थ टॉक का आयोजन

उदयपुर. शाबाश इंडिया

जैन सोशल ग्रुप संगिनी मैन उदयपुर व पारस हेल्थ उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में हेल्थ टॉक का आयोजन पारस हेल्थ के सभागार में किया गया। नवकार मंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। ग्रुप अध्यक्ष डॉ प्रमिला जैन ने बताया के संगिनी बहनों को स्वास्थ्य के दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों- ऑथोर्पेडिक्स और स्त्री रोग विज्ञान में ज्ञान और अंतर्दृष्टि के साथ सशक्त बनाने के उद्देश्य से इस वार्ता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता-डॉ आशीष सिंघल,वरिष्ठ सलाहकार - आथोर्पेडिक्स, पारस हेल्थ एवं डॉ शीतल कौशिक, वरिष्ठ सलाहकार - प्रसूति एवं स्त्री रोग थे। हड्डी और जोड़ों के स्वास्थ्य में विशेषज्ञ डॉ. आशीष सिंघल ने हड्डियों के रख-रखाव, आथोर्पेडिक स्थितियों के प्रबंधन और सक्रिय जीवनशैली के लिए गतिशीलता को अनुकूलित करने पर विशेष सलाह देते हुए जॉइन्ट के लिए हल्के व्यायाम भी बताए। डॉ. शीतल कौशिक ने महिलाओं के स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं पर बहुमूल्य जानकारी प्रदान करते हुए प्रजनन कल्याण से लेकर हार्मोनल संतुलन तक एवं मेंटल हेल्थ और जीवन के हर उम्र में अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए व्यावहारिक सुझाव दिए। दोनों डॉक्टर्स ने प्रश्नोंतर सेशन में संगिनी बहनों द्वारा पूछे गए अपने स्वास्थ्य संबन्धित शंकाओं का समाधान भी किया। कार्यक्रम का संयोजन व संचालन डॉ प्रमिला जैन द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 55 संगिनी बहनें उपस्थित रही।

लायंस क्लब जयपुर स्पार्कल द्वारा कुष्ठाश्रम में राशन व वस्त्र आदि वितरित किए

जयपुर. शाबाश इंडिया। लायंस क्लब जयपुर स्पार्कल द्वारा कुष्ठाश्रम की कच्ची बस्ती के परिवारों को वस्त्र, साड़ीयां, सूट, जीन्स, शर्ट, कम्बल, गमझे, बेड शीट्स पिलो कवर व खाने का सामान, सरसों का तेल 5 लीटर, 10 ' केले, 10 ' संतरे, 10 ' गाजर, 10 ' टमाटर, 10 ' घीया, 5 ' आलू, टूथ ब्रश, पेस्ट कोलगेट, पेन, पेंसिल, बिस्किट व अन्य सामग्री वितरित की। उक्त कार्यक्रम में क्लब अध्यक्ष लायन रानी पाटनी, कोषाध्यक्ष मंजू पूरी, विजया कोठारी, सुशीला छाबड़ा, मृदुला जैन, संजय लता व सरोज रुंगटा उपस्थित रही। प्रोजेक्ट के बाद सभी सदस्याओं ने श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरी मंदिर के दर्शन किये व पिकनिक मनाई, कई गेम खेले। पिकनिक में सशक्तिकरण ग्रुप की महिलाओं ने भी साथ मे एन्जॉय किया।

एआई इकोनॉमी में मानवीयता की कद्र कहीं ज्यादा रहेगी

@...पेज 4 पर

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज हुए ब्रह्मलीन

जैन समाज ने अपने प्रतिष्ठान बंद रखकर भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी, सुभाष गंज मैदान में अंतिम यात्रा का सीधा प्रसारण दिखाया गया

अशोक नगर. शाबाश इंडिया

जैन जगत के सूरी परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की संलेखना पूर्वक समाधि आज प्रातः काल की वेला में तीर्थ राज डोंगरगढ़ हो गई समाधि के समाचार से जैन समाज ही नहीं जैनेतर समाज भी शोक में डूबगया समाधि यात्रा को श्री दिगम्बर जैन पंचायत कमेटी द्वारा सामुहिक रूप से विनयांजलि स्वरूप समूचे समाज के साथ सुभाष गंज मैदान डोल यात्रा को देख महा मंत्र णमोकार मंत्र का जाप किया।

धरती के देवता से कठोर तपस्या थी आचार्य श्री की: विजय धुर्रा

अंतिम संस्कार के बाद अंतिम यात्रा सभा को सम्बोधित करते हुए मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने कहा कि धरती के देवता जन जन के आराध्य दिगम्बर सरोवर के राजहंस संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने तपस्या के पचपन सालों में भारतीय संस्कृति को इतना कुछ दिया कि इसको पचाने में सदियां लग जायेगी हमारे जिले में आचार्य श्री का तीन बार 1979 अशोकनगर 1987 थूवोनजी में 2018 मे मुंगावली पधारे हमेशा उनके आशीर्वाद से हमारे यहां चातुर्मास होते रहे। उनके आशीर्वाद से अशोक नगर सर्वोदय विद्यासागर पाठशाला दयोदय विद्यासागर पाठशाला के माध्यम से वच्चो को संस्कारित शिक्षा ज्ञान अर्जित करने की ओर प्रेरित किया।

जैन समाज दो दिन बाद करेगा वियांजलि सभा : राकेश कासंल जैन समाज के अध्यक्ष राकेश कासंल ने कहा कि ये अपूर्णीय क्षति है जिसे कभी अपने जीवन में भरा नहीं जा सकेगा आज ऐसी घड़ी है कोई कुछ कहने की स्थिति में नहीं है आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने जैन धर्म की ऐसी प्रभावना की जिसकी किसी को कल्पना नहीं थी हम सब मिलकर दो दिन बाद मंगलवार को सभी समाजों के साथ आचार्य भगवंत को अपनी भाव भीनी विनयांजलि अर्पित करेंगे।

भारतीय संस्कृति के प्रवल पक्षधर थे : राकेश अमरोद

जैन समाज के महामंत्री राकेश अमरोद ने कहा कि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज भारतीय संस्कृति सभ्यता को जीवन में उतारें के प्रवल पक्षधर थे उन्होंने देशभर में पैदल-पैदल चलकर गौशालाओं देश के युवाओं को अहिंसक रोजगार उपलब्ध कराने व अहिंसक वस्त्र की सुलभता की भावना से नगर नगर में हस्तकरघा मात्र भाषा हिन्दी को बढ़ावा देने का सन्देश जन जन को दिया।

आचार्य श्री के दो दो चातुर्मास हुए थूवोनजी में

थूवोनजी कमेटी के अध्यक्ष अशोक जैन टींगू महामंत्री विपिन सिंघई ने कहा कि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने चार सौ से अधिक पिच्छिका धारी साधु साध्वीयो को जैनेश्वरी दीक्षा दी उन्होंने एक लाख किलोमीटर से भी अधिक की पदयात्रा कर पूरे भारत वर्ष जियो और जीने भगवान महावीर स्वामी के सन्देश को जन जन तक पहुंचा उन्होंने थूवोनजी में दो दो चातुर्मास किए उनसे जुड़ी बहुत सारी यादें ताजा हो रही है इस दौरान जैन समाज के उपाध्यक्ष अजित वरोदिया राजेंद्र अमन प्रदीप तारई कोषाध्यक्ष सुनील अखाई मंत्री शैलेन्द्र श्रागर संयोजक उमेश सिघई मनीष सिघई मनोज रन्नौद थूवोनजी कमेटी के अध्यक्ष अशोक जैन टींगू महामंत्री विपिन सिंघई मंत्री विनोद मोदी राजेन्द्र हलवाई कोषाध्यक्ष सौरव वाझल गौशाला अध्यक्ष दिनेश मैदापुर महामंत्री प्रसुन प्रमोद मंगलदीप कोषाध्यक्ष निर्मल मिर्ची सहित जैन मिलन अध्यक्ष मनोज भोला युवा वर्ग अध्यक्ष सुलभ अखाई जैन मिलन सैटल जैन जाग्रति मंडल के नितिन वज युवा संघ के डा हेमंत टडैया सहित जैन समाज के सैकड़ों भक्तों ने अंतिम संस्कार यात्रा को अपनी आंखों से निहारा।

दिगंबर जैन समाज नौगामा द्वारा श्रद्धांजलि सभा एवं मौन जुलूस निकाल

नौगामा, बांसवाड़ा. शाबाश इंडिया

परम पूज्य आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज कि समाधि दिनांक 17 फरवरी को तीर्थ क्षेत्र डूंगरगढ़ चंद्रगीरी में हो गई है समस्त भारतवर्ष में शोक की लहर छा गई है परम पूज्य आचार्य गुरुवर विद्या सागर जी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु संपूर्ण भारतवर्ष में श्रद्धांजलि सभाए चल रही है आज नौगामा नगर में भी परम पूज्य आचार्य गुरु विद्यासागर जी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु प्रातः आदिनाथ मंदिर समवशरण मंदिर सुखो दे तीर्थ नसिया जी में शांति धारा अभिषेक के साथ णमोकार मंत्र का जाप करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की गई इस अवसर पर जैन पाठशाला के छात्राओं द्वारा आचार्य जी की पूजन कर अपने भाव व्यक्त की दोपहर 12:00 बजे से विशाल मोन शोभा यात्रा नगर भ्रमण को निकली सभी धर्म प्रेमी बंधुओ पुरुष वर्ग ने सफेद वस्त्र में एवं महिला केसरिया वस्त्र में विशाल शोभा यात्रा के साथ णमोकार मंत्र का जाप करते हुए नगर भ्रमण कर रहे थे एवं शोभा यात्रा के साथ समाधि मरण का भजन गौशाला की गाड़ी से प्रसारित किया जा

रहा था जैन पाठशाला की सभी छात्र जैन धर्म ध्वज लेकर शोभायात्रा में चल रहे थे सभी धर्म प्रेमी बंधुओ द्वारा अपने प्रतिष्ठान बंद रखकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहे थे।शोभा यात्रा समवशरण मंदिर होते हुए तालाब बस स्टैंड से पंडाल में पहुंची जहां पर रमेश चंद्र गांधी ने मंगलाचरण कर आचार्य श्री के जीवनी बताई , इस अवसर पर आशीष पिंडरमाया दानमल गांधी सुभाष नानावटी भारत पंचोरी नवयुक मंडल अध्यक्ष मुकेश गांधी कुसुम लता नानावटी ने आचार्य के संस्मरण सुनाते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित की शाम 7:00 बजे आदिनाथ मंदिर में भक्तांबर एवं आरती कर संपूर्ण समाज की ओर श्रद्धांजलि अर्पित की ।

-प्रवक्ता सुरेश चंद्र गांधी

आचार्यश्री के समाधिमरण मरण पर श्रद्धांजलि आलेख

युग द्रष्टा बेमिसाल विराट व्यक्तित्व आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का जाना एक युग का अंत

डॉ सुनील जैन संचय, ललितपुर

परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज न केवल श्रमण संस्कृति के दैदीप्यमान नक्षत्र थे बल्कि पूरी भारतीय संस्कृति को उन्होंने अपनी साधना के बल गौरवान्वित किया । अध्यात्म सरोवर के राजहंस, सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र के महानद, साधना के सुमेरू, भारतीय संस्कृति के अवतार, संत शिरोमणि महाकवि आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर जी महाराज दिगम्बर जैन परंपरा के ऐसे महान संत थे, जो सही मायने में साधना, ज्ञान, ध्यान व तपस्यारत होकर आत्मकल्याण के मार्ग पर सतत अग्रसर रहे। दिगम्बर जैन परम्परा के सर्वमान्य संत शिरोमणि आचार्य भगवन् विद्यासागर महाराज ने 77 वर्ष की आयु में छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़ में श्री दिगंबर जैन तीर्थ चंद्रगिरि में तीन दिन के उपवास पूर्वक 17 और 18 फरवरी की मध्यरात्रि में 2:30 पर समाधि पूर्वक नश्वरदेह को त्याग दिया है । उनकी साधना अद्वितीय थी।

पीएम मोदी ने बताया अपूरणीय क्षति

आचार्य विद्यासागर महाराज के ब्रह्मलीन होने की खबर मिलते ही पीएम नरेंद्र मोदी ने दुख व्यक्त करते हुए इसे अपूरणीय क्षति बताया है। पीएम ने लिखा कि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज जी का ब्रह्मलीन होना देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है। लोगों में आध्यात्मिक जागृति के लिए उनके बहुमूल्य प्रयास सदैव स्मरण किए जाएंगे। वे जीवनपर्यंत गरीबी उन्मूलन के साथ-साथ समाज में स्वास्थ्य और शिक्षा को बढ़ावा देने में जुटे रहे। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे निरंतर उनका आशीर्वाद मिलता रहा। आचार्य श्री विद्यासागर जी 10 अक्टूबर 1946 को कर्नाटक के बेलगांव जिले के सदलगा में शरद पूर्णिमा को जन्मे थे. उनके बचपन का नाम विद्याधर था. उन्होंने 30 जून 1968 को अजमेर में मुनि दीक्षा ली. 22 नवंबर 1972 को उन्हें आचार्य पद मिला था. उन्हें आचार्य ज्ञान सागर जी ने दीक्षा दी थी।

महापुरूष के विशाल कृतित्व से भारतीय साहित्य हुआ समृद्ध

आज तक के इतिहास में किसी भी संस्कृत के विद्वान ने पांच शतक से ज्यादा संस्कृत भाषा में नहीं लिखे हैं किंतु आचार्यश्री

ने अपनी लेखनी से संस्कृत भाषा में छह शतक लिख एक नूतन इतिहास की संरचना की है। आपने ज्ञान, ध्यान, तप के यक्ष में अपने आपको ऐसा आहूत किया कि अल्पकाल में ही प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिंदी, अंग्रेजी, मराठी, कन्नड भाषा के मर्मज्ञ साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध हो गये। आपने प्राचीन जैनाचार्यों के 25 प्राकृत-संस्कृत ग्रंथों का हिंदी भाषा में पद्यानुवाद कर पाठकों को समरसता प्रदान की है। आपके द्वारा रचित हिन्दी भाषा में लघु कविताओं के चार संग्रह ग्रंथ- नर्मदा का नरम कंकर, तोता क्यों रोता , डूबोमत लगाओ डुबकी, चेतना के गहरा में, ये कृतियां साहित्य जगत में काव्य सुषमा को विस्तारित कर रही हैं।

पंचमकाल का आश्चर्य थी उनकी कठोर-चर्या

वर्तमान समय में आचार्यश्री का संघ सम्पूर्ण देश का सबसे बड़ा दिगम्बर जैन साधु संघ है, संघ में संघ के नाम का कोई वाहन आदि नजर नहीं आता। टीवी, मोबाइल, लैपटॉप आदि आधुनिक सुविधा साधु के कमरे में नहीं दिखती। संघ में सभी संत, साधु शिक्षित, संस्कारी, बाल ब्रह्मचारी हैं। विहार के समय भक्तगण बड़ी संख्या में मार्ग में चौका लगाकर आहारदान देते थे और पुण्य लाभ लेकर साथ-साथ हजारों का जनसैलाव चलता था। महत्वपूर्ण बात यह है कि इनके संघ में संघपति की तो बात दूर है, कोई भी निजी चौका लेकर साथ नहीं चलता, चौका कितना आसान मात्र दाल-फुलका, न सब्जी, न फल, न घी, क्या लिखें, क्या न लिखें? जहां-जहां संघ का प्रवास होता था, वहां-वहां सैकड़ों की संख्या में लोग चौका लगाने उमड़ पड़ते थे। चाहे कितनी ही तेज गर्मी हो या कितनी ही कड़कड़ाती ठंड, संघ के किसी साधु के कमरे में कूलर, एसी, हीटर देखने को नहीं मिलते। न पंखे का उपयोग करते, न ही मच्छर भगाने वाले किसी ऑयल या कायल का उपयोग करते, धन्य है ऐसी साधना। किसी तरह के तंत्र, मंत्र, ताबीज आदि की क्रियाओं से आचार्यश्री का संघ अछूता है।

जब तक सृष्टि के अधरों पर, करूणा का पैगाम रहेगा।
तब तक युग की हर धड़कन में, विद्यासागर का नाम रहेगा।।

नारी शिक्षा और संस्कारों के लिए आपकी प्रेरणा से वर्तमान में संचालित ''प्रतिभास्थली'' शिक्षण संस्थायें परम्परा और आधुनिक शिक्षण संस्थाओं की समन्विति का एक आदर्श प्रतिरूप हैं। नई शिक्षा नीति 2020 का निर्धारण करने वाली समिति के अध्यक्ष डॉ. कस्तूरीरंगन ने आपके निकट जाकर शिक्षा नीति निर्धारण हेतु विशेष मार्गदर्शन प्राप्त किया था । महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी एवं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी आदि अनेक गणमान्य राजनेता उनके चरणों में पहुँचकर राष्ट्र के लिए मार्गदर्शन प्राप्त करते थे । आचार्यश्री का मूलमंत्र था - ''इंडिया छोड़ो भारत बोलो''। उनका संदेश था कि भारत की प्रचीन संस्कृति, शिक्षा और परम्पराओं पर हमें गौरव करना चाहिए और उनका अनुकरण करना चाहिए। आचार्यश्री चलते फिरते तीर्थ थे। उनके तेज दमकते हुए आभामंडल और मुस्कान को देखकर हजारों लोगों के दुख दूर हो जाते थे। आचार्यश्री के दर्शन जो भी करता था व धन्य हो जाता था। उनकी दिव्य देशना में जो अमृतवाणी झरती थी उसे पान कर हजारों लोगों की प्यास बुझती थी। आचार्यश्री की हर चर्या अतिशय-सी दिखती थी। उनकी दिव्य देशना में जो अमृतवाणी झरती थी उसे पान कर हजारों लोगों की प्यास बुझती थी। श्रमण संस्कृति का सूर्य !ऐसे युगद्दष्टा शताब्दियों सहस्राब्दियों में कभी कभार जन्म लेते हैं परम पूज्य जैन दिगम्बर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के विचार प्रकाश स्तंभ बनकर सदैव हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे। समाधी नमन !

श्रद्धामय विनयांजलि सभा का किया गया आयोजन

लार, टीकमगढ़. शाबाश इंडिया

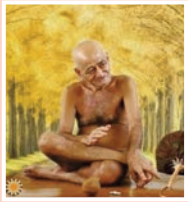

छत्तीसगढ़ की धर्म नगरी डोंगरगढ़ चंद्रगिरि दिगम्वर जैन तीर्थ क्षेत्र पर समाधि साधनारत इस युग के देवता महान संत आचार्य प्रवर 108 श्री विद्यासागर जी मुनिराज के समता भाव से संलेखना पूर्वक समाधिस्थ ब्रह्मलीन हो जाने पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का गुणगान करते हुए उनके प्रति श्रद्धामय विनयांजलि सभा का आयोजन जैन मंदिर प्रांगण में किया गया। कार्यक्रम का संचालन विजय जैन विशारद एवं महेंद्र सिंघई द्वारा किया गया। मुकेश जैन द्वारा विनयांजलि समर्पित करते हुआ कहा की जैन धर्म के सबसे बड़े संत, संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के ब्रह्मलीन होने की खबर न सिर्फ जैन समाज के लिए बल्कि देश और दुनिया के लिए अपूरणीय क्षति है। आचार्य श्री के चरणों में शत शत नमन करता हु। आचार्य श्री के प्रेरणा संदेश सम्पूर्ण मानवजाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे। दिनेश जैनशिक्षकश पुष्पेंद्र जैन,राजेश जैन,कमलेश जैन, मयंक जैन कवि, नरेन्द्र जैन,पवन जैन,डाक्टर शिखर चंद्र जैन,मयंक सिंघई दवारा आचार्य श्री के श्री चरणो श्रद्धांजलि समर्पित की गई।

विराट सम्मेलन में आए देश-विदेश के संतों ने कहा...

अपनी संपदा का उपयोग सदैव धर्म के लिए ही करना चाहिए

सभी संतो ने जैनाचार्य विद्यासागर जी को याद किया और श्रद्धांजलि दी

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री पंचखंड पीठ पावनधाम विराटनगर, श्री धर्म फाउंडेशन ट्रस्ट पावन धाम एवं माहेश्वरी समाज के संयुक्त तत्वावधान में जवाहर नगर जयपुर स्थित माहेश्वरी स्कूल के तक्षशिला ऑडिटोरियम में रविवार को परम् पूज्य ब्रह्मलीन राष्ट्रसंत आचार्य स्वामी धर्मेन्द्र महाराज की स्मृति में विराट विश्व संत-सम्मेलन का आयोजन हुआ। श्री धर्म फाउंडेशन के अध्यक्ष सुधीर जैन गोधा एवं महासचिव गब्बर कटारा ने बताया कि 11 बजे संतों का स्वागत कर आसन ग्रहण करवाया गया। इसके बाद संतों ने दीप प्रज्वलन कर संत सम्मेलन का शुभारंभ किया।

संतों ने विश्वास व्यक्त किया कि मोदी है तो मुमकिन है...

इस अवसर पर यू.एस.ए. से आए स्वात्मानन्द महाराज व स्पेन से आए स्वामी उमेश योगी ने अपने उद्बोधनों में वैश्विक स्तर पर हिन्दू धर्म के संगठन की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया। सन्त सम्मेलन को स्वामी राघवाचार्य महाराज, आलोक कुमार, स्वामी ब्रह्मेशानन्द, स्वामी कमलनयन दास महाराज, परम पूज्य स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती के साथ ही देश के विभिन्न हिस्सों से आए संतों ने संबोधित किया। सभी ने रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद अब काशी-मथुरा में मंदिर स्थापना की शीघ्र आवश्यकता पर जोर देते हुए यह विश्वास व्यक्त किया कि मोदी है तो मुमकिन है।

महाराज के लेख पढ़कर आती थी ऊर्जा और शक्ति...

विहिप के कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार ने कहा कि 1975 में आपातकाल के समय अंतरज्वाला पुस्तक में महात्मा रामचन्द्र वीर जी महाराज के लेख पढ़ कर ऊर्जा और शक्ति प्राप्त होती थी, आज उसी शक्ति और ऊर्जा की जरूरत है। श्री पंच खंड पीठाधीश्वर आचार्य सोमेंद्र महाराज सभी संतो को काशी और मथुरा के लिए एकजुट कर रहे हैं। कृष्ण जन्म स्थान हमें मिल कर रहेगा, काशी विश्वनाथ मंदिर के ज्ञान वापी का मामला भी शीघ्र हल होगा।

आचार्य स्वामी धर्मेन्द्र महाराज ने हिन्दू धर्म की प्रतिष्ठापनार्थ में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया : गोविन्द गिरी

इस अवसर पर मुख्य अतिथि स्वामी गोविन्द गिरी महाराज ने अपने उद्बोधन में राष्ट्र उत्कर्ष एवं गोरक्षा हेतु ब्रह्मलीन परम्पूज्य संत महात्मा रामचन्द्रवीर महाराज द्वारा किए गए सुप्रयासों को याद करते हुए कहा कि उन्हीं की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए ब्रह्मलीन राष्ट्रसंत आचार्य स्वामी धर्मेन्द्र महाराज ने हिन्दू धर्म की प्रतिष्ठापनार्थ अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया। श्री राम मंदिर पुनर्निर्माण में उनका योगदान चिरस्मरणीय रहेगा।उन्होंने कहा कि आचार्य स्वामी सोमेन्द्र महाराज वीर जी महाराज एवं धर्मेन्द्र महाराज की उसी परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं।स्वामी धर्मेन्द्र महाराज की स्मृति में आयोजित यह विराट संत सम्मेलन उसी दिशा में एक और कदम है। कार्यक्रम के मुख्य सहयोग कर्ता मोहित गणेश राणा ने बताया कि आचार्य सोमेन्द्र महाराज ने परम् पूज्य ब्रह्म लीन राष्ट्र संत आचार्य स्वामी धर्मेन्द्र महाराज स्मृति सम्मान का शुभारंभ किया। यह सम्मान जो प्रतिवर्ष संतों को दिया जाएगा। इस वर्ष यह सम्मान परम् पूज्य स्वामी ब्रह्मेशानन्द महाराज को परम् पूज्य गोविन्द गिरी महाराज, परम्पूज्य कमलनयन दास महाराज, परम्पूज्य राघवाचार्य महाराज व स्वामी सोमेन्द्र महाराज के कर कमलों द्वारा प्रदान किया गया।

मथुरा में श्री कृष्ण जन्मभूमि एवं काशी में ज्ञानव्यापी परिसर का शीघ्र हो समाधान...

श्री धर्म फाउंडेशन के अध्यक्ष सुधीर जैन गोधा ने स्वागत उद्बोधन द्वारा संत जनों का अभिनन्दन किया। सम्मेलन में पंचखंड पीठाधीश्वर आचार्य स्वामी सोमेन्द्र महाराज ने पूरे संत सम्मेलन का सारतत्व प्रस्तुत करते हुए प्रति वर्ष इस संत सम्मेलन के आयोजन की घोषणा की। संत सम्मेलन में सभी संतों के द्वारा यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया कि मथुरा में श्री कृष्ण जन्मभूमि व काशी में ज्ञानव्यापी परिसर विवाद का शीघ्र समाधान किया जाकर वहाँ मन्दिर पुनर्स्थापित करने में समस्त हिन्दु-मुस्लिम समुदायों को सहयोग कर देश में सामाजिक समरसता व सौहार्द्र का वातावरण बनाकर एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। इस प्रस्ताव पर परम् पूज्य स्वामी गोविन्द गिरी महाराज, परम् पूज्य स्वामी राघवाचार्य महाराज एवं परम्पूज्य स्वामी कमलनयन दास महाराज ने विस्तार से प्रकाश डाला तथा अन्य सभी संतों ने प्रस्ताव का अनुमोदन किया। विख्यात जैन आचार्य संत विद्यासागर महाराज के समाधि होने पर संत सम्मेलन में आए सभी संतो ने 2 मिनट का मौन रखकर उनके जीवन को विराट आध्यात्मिक यात्रा कहा।

आचार्यश्री विद्यासागर महाराज की समाधि, मोदी ने भी किए श्रद्धासुमन अर्पित

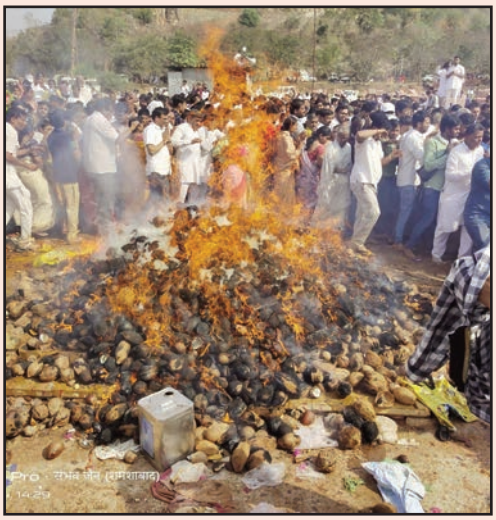

डोंगरगढ़, राजनांदगांव. शाबाश इंडिया

विश्व प्रसिद्ध दिगंबर जैन संत आचार्यश्री विद्यासागर महामुनिराज आज तड़के छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले के डोंगरगढ़ में सल्लेखनापूर्वक समाधि की अवस्था को प्राप्त कर ब्रह्मलीन हो गए। देश के विभिन्न हिस्सों से आए हजारों जैन धर्मावलंबियों की मौजूदगी में दिन में उनका अंतिम संस्कार किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, पड़ोसी राज्य मध्यप्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल, मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव, अनेक केंद्रीय मंत्रियों, अनेक राज्यों के मुख्यमंत्रियों और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) तथा कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ने आचार्यश्री विद्यासागर के समाधिस्थ होने पर संवेदनाएं व्यक्त करते हुए उनके कार्यों का स्मरण किया है। मोदी ने दिल्ली में भाजपा के राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान अपने संबोधन में आचार्यश्री का स्मरण किया और वे उनका स्मरण करते हुए भावुक हो गए। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, ह्लमुझे विश्वास है कि संत शिरोमणि आचार्यश्री 108 विद्यासागर जी महाराज जी के सिद्धांत और विचारों से भारत भूमि को सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी।ह्व मोदी ने आचार्यश्री के साथ हुयीं उनकी मुलाकातों का भी जिक्र किया। अधिवेशन के दौरान भाजपा नेताओं ने दो मिनट का मौन रखकर आचार्यश्री के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए। डोंगरगढ़ स्थित चंद्रगिरी तीर्थ क्षेत्र में रविवार तड़के लगभग दो बजकर पैंतीस मिनट पर आचार्यश्री ने अंतिम सांस ली। वे 77 वर्ष के थे। कुछ दिनों से अस्वस्थता के बावजूद उन्होंने अपनी निर्धारित दिनचर्या और साधना का क्रम नहीं छोड़ा। आचार्यश्री ने सल्लेखना पूर्वक समाधि के उद्देश्य से पिछले तीन दिनों से उपवास और मौन का संकल्प लेकर अन्न जल का भी त्याग कर दिया था। आचार्यश्री के समीप अनेक दिगंबर जैन मुनि, ब्रह्मचारी भैया और श्रद्धालु मौजूद थे। जैन परंपराओं के अनुसार आचार्यश्री ने व्रतों का पालन करते हुए आचार्य पद भी त्याग दिया। चंद्रगिरी तीर्थक्षेत्र के प्रबंधकों के अनुसार आचार्यश्री के अस्वस्थ होने की सूचना के चलते यहां पर हजारों की संख्या में जैन धर्मावलंबी पहले ही आ चुके थे। समाधि की सूचना के बाद हजारों की तादाद में लोग और पहुंच गए। दिन में लगभग एक बजे जैन मुनियों की ओर से कराए गए धार्मिक

संस्कार के बीच आचार्यश्री की पार्थिवदेह को एक विशेष प्रकार से तैयार की गयी डोली में विराजमान कर अंतिम संस्कार स्थल ले जाया गया, जहां पर अंतिम संस्कार संपन्न हुआ और उनकी देह अग्नि को समर्पित कर दी गयी। प्रबंधकों के अनुसार जैन मुनि योगसागर महाराज, समतासागर महाराज, अभय सागर महाराज, संभव सागर महाराज, प्रसाद सागर महाराज और अन्य संघस्थ मुनि डोंगरगढ़ में मौजूद हैं। इसके अलावा देश के विभिन्न हिस्सों में मौजूद दिगंबर जैन संत पदविहार करते हुए डोंगरगढ़ की ओर बढ़ रहे हैं। इसके मद्देनजर यहां पर आवश्यक व्यवस्थाएं की जा रही हैं। आचार्यश्री से दीक्षित हजारों की संख्या में ब्रह्मचारी भैया और दीदियां भी डोंगरगढ़ में मौजूद हैं। आचार्यश्री का जन्म 10 अक्टूबर 1946 को कर्नाटक राज्य के बेलगांव जिले के सदलगा गांव में हुआ था। वैराग्य की भावना बचपन से ही उनके कार्यों में परिलक्षित होती थी और उन्होंने 30 जून 1968 को राजस्थान के अजमेर नगर में मात्र 22 वर्ष की युवास्था में ही अपने गुरू आचार्यश्री ज्ञानसागर जी महाराज से मुनिदीक्षा ग्रहण की थी। आचार्यश्री ज्ञानसागर महाराज ने अपने शिष्य मुनि विद्यासागर की कठिन तपस्या को देखते हुए उन्हें युवावस्था में ही आचार्य पद सौंप दिया था। अनेक भाषाओं के जानकार और मूकमाटी जैसे महाकाव्य की रचना कर चुके आचार्य विद्यासागर के जीवन का काफी समय मध्यप्रदेश में बीता। अनेक पुस्तकों की रचना कर चुके आचार्यश्री के भक्तों में सिर्फ जैन धर्मावलंबी ही नहीं, बल्कि जैनेतर व्यक्ति भी शामिल हैं। हिंदी, संस्कृत, मराठी, कन्नड़, प्राकृत और अन्य भाषाओं के जानकार आचार्यश्री ने अपने जीवनकाल में लगभग साढ़े तीन सौ मुनि और आर्यिका दीक्षाएं दीं। इसके अलावा हजारों की संख्या में ब्रह्मचारी भैया और दीदियां भी उनसे दीक्षित हैं।

श्रद्धांजली जुलुस धुलियान में

धुलियान, पश्चिमी बंगाल. शाबाश इंडिया। संत शिरोमणि प.पू.आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महा मुनिराज की आज समतापूर्वक समाधि हो गई। आज दोपहर 3 बजे धुलियान मंदिर प्रांगण से एक जुलुस निकाला गया जिसमें पुरुष वर्ग सफेद वस्त्र व महिलाए केशरिया वस्त्र पहन कर आचार्य श्री के चित्रको पालकी में व आचार्य श्री का चित्र व वाणी श्लोगन के साथ हाथ में ले कर श्रद्धांजली प्रगट कर रहे थे । उसके पश्चात चालीसा व णमोकार मन्त्र का पाठ हुआ तथा संवेदना प्रकट किया गया। सबने अपना अपना कारोबार बंद रखा। **रिपोर्ट : संजय बड़जात्या**

आचार्य विद्यासागर महाराज के समाधिमरण से जैन समाज में शोक की लहर

रोहित जैन. शाबाश इंडिया

नसीराबाद। जैनाचार्य विद्यासागर महाराज बीती रात छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़ स्थित चंद्रोदय तीर्थ क्षेत्र पर हुए समाधिमरण से नगर के जैन समाज में शोक की लहर छा गई। सोशल मीडिया के माध्यम से जैसे ही रविवार को नगर में आचार्य विद्यासागर के समाधिमरण के समाचार मिले इससे सूचना जैन समाज स्तब्ध रह गया। जैन समाज ने रविवार को अपने प्रतिष्ठान बंद रखे। जैन समाज की ओर से आदिनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर स्थित समवशरण भवन में आचार्य विद्यासागर महाराज की डोला यात्रा का एलईडी लगाकर लाइव टेलीकास्ट की व्यवस्था की। समस्त जैन समाज ने नसीराबाद में प्रवासरत मुनि द्वय अर्चित सागर महाराज व मुनि वैराग्य सागर महाराज के सानिध्य में आचार्य विद्यासागर महाराज को अपनी विनयांजलि दी।

राधा निकुंज, मानसरोवर में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

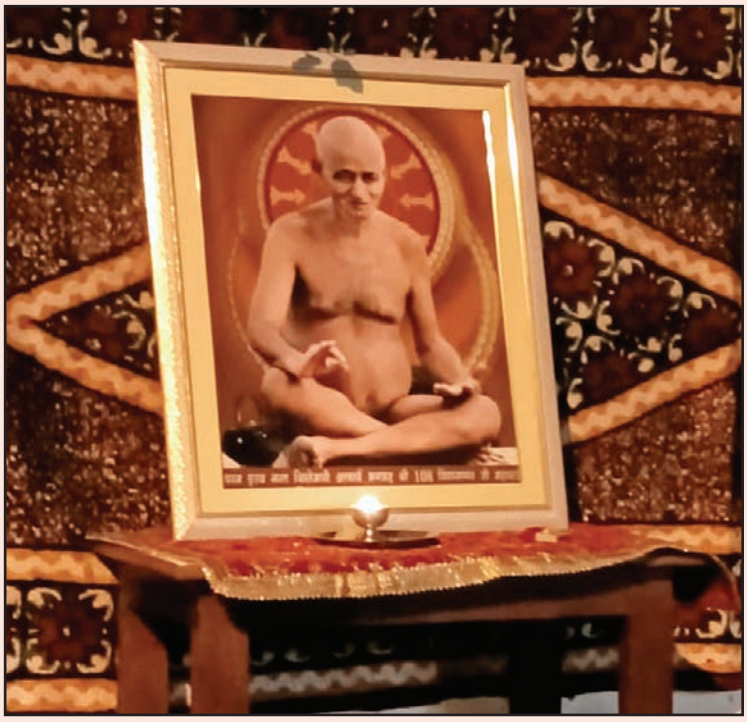

जयपुर. शाबाश इंडिया

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के समाधि मरण पर संपूर्ण राधा निकुंज, मानसरोवर परिवार में शोक की लहर दौड़ गई । सूर्य प्रकाश जी सोगानी ने बताया कि इस अवसर शाम को सभी सदस्यों ने सपरिवार राधा निकुंज जैन मंदिर के तहत अहिंसा मार्ग पर श्रद्धांजलि सभा में गुरु देव आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महा मुनिराज को शत-शत नमन करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

सीकर जैन समाज में शोक की लहर, णमोकार पाठ व विनयांजलि सभा का हुआ आयोजन

सीकर. शाबाश इंडिया

परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज की शनिवार रात्रि में 2:35 बजे ''श्री चंद्रगिरि तीर्थ, डोंगरगढ़'' में हुई समतापूर्वक समाधि हो गई। जैन समाज सीकर से प्रवक्ता विवेक पाटोदी ने बताया कि आचार्य भगवन का यूं चले जाना संपूर्ण विश्व के जैन समाज के साथ साथ राष्ट्र के लिए भी एक अपूरणीय क्षति है । उन्होंने निरंतर समाज के साथ साथ संपूर्ण राष्ट्र के हितार्थ बहुत से कार्य किए । इस युग के भगवान आचार्य श्री विद्यासागर जी के समाधि उपरांत उन्हें श्रद्धांजली अर्पित करते हुए सीकर जैन समाज ने रविवार को अपने प्रतिष्ठान पूर्णतः बंद रखे । रविवार को आयोजित अन्य विभिन्न सामाजिक कार्यक्रम भी इस दौरान स्थगित किए गए।प्रातः जैन मंदिरों में विशेष पूजा अर्चना व मंत्र जाप हुए । जैन परिवारों द्वारा अपने घरों में णमोकर के जाप किए गए । सांयकाल जैन स्कूल प्रांगण में सकल जैन समाज सीकर द्वारा णमोकार पाठ व विनयांजलि सभा का आयोजन किया गया , जिसमे समाज के प्रबुद्ध जनों द्वारा गुरुदेव को विन्यांजलि दी गई ।

विनयांजलि:- यादें 1970 में हमारे गाँव रेनवाल में हुए चातुर्मास की

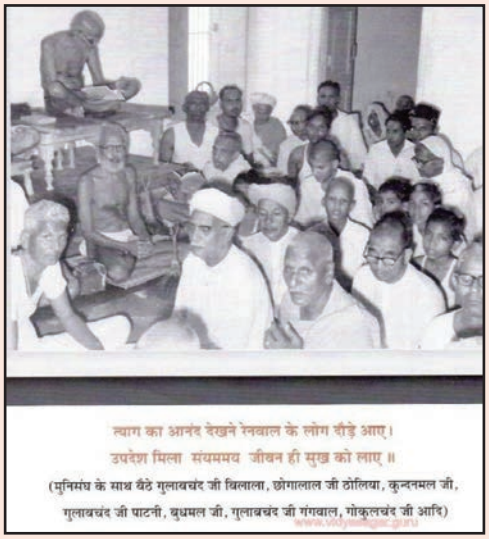

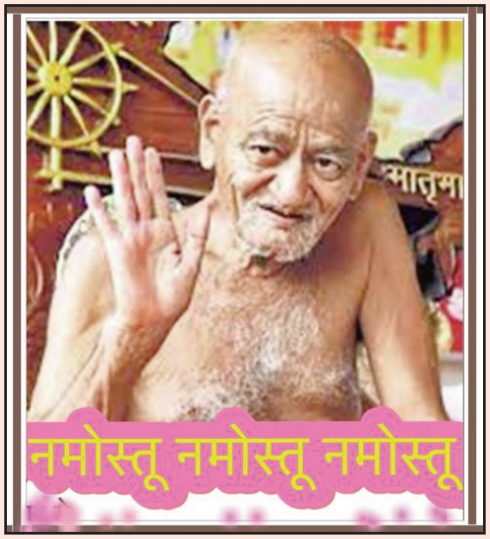

हम निःशब्द हैं, हमें जीवन के यथार्थ का बोध व अध्यात्म का ज्ञान करा कर सद्भावना का संदेश गुरुवर प्रदान करते हुए युगद्दष्टा, संत सिरोमणी, परम पूज्य आचार्य श्री 108विद्यासागर जी महाराज यमसल्लेखना पूर्वक समाधि को प्राप्त हो गये है । मुझे याद है जब 23 वर्षीय युवा तेजस्वी विद्वान मुनि विद्या सागर जी ने दीक्षा गुरु आचार्य ज्ञान सागर जी महाराज के साथ जयपुर ज़िले का एक मात्र चातुर्मास हमारे गाँव किशनगढ़ रेनवाल की धरा पर वर्ष 1970 में किया था । जब हम 18 वर्ष के कॉलेज के छात्र थे तब इनकी गुरु भक्ति व चर्या से खींचे हुए इनका सानिध्य प्राप्त कर चार माह में साधु सेवा करते हुए हमने इनसे धर्म का क ख ग सीखा था ।आज वही आशीर्वाद हमें साधु सेवा के लिए शक्ति प्रदान कर रहा है। पूज्य श्री निःसंदेह भले ही हमारे मध्य न हों किन्तु उनका सम्पूर्ण जीवन दर्शन हमारे समक्ष है। उस पथ के हम अनुगामी बनें, यही हमारी सच्ची विनम्र श्रद्धांजलि, विनयांजलि होगी। समाधिस्थ आत्मा शीघ्र ही सिद्ध शिला पर विराजमान हो, यही मंगल भावना है।

संकलन :
पदम जैन बिलाला, जनकपुरी, जयपुर

अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि, आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

कंठ रुंधा है..
कोटि दीप जलाने वाली, महाज्योति क्यों आज नही है, जन जग पथ बतलाने वाली,
महाविभूति आज नहीं है.
कर के मंगल आशीष जाने,
कहाँ विलीन हुये पल भर में.
नयन निरझरित अमृत सरिता,
सूख गयी क्यों अब इस जग में.
कोटि मन व नयन हैं रोते,
उनके अपने नाथ कहाँ हैं?
वेद, शास्त्र, गीता प्रतीक जो,
विद्यासागर महाराज कहाँ हैं?
कंठ रुंधा है, नयन भरे हैं,
रोम रोम पीड़ा से व्याकुल,
सुख, शांति, आनंद देने वाले,
युगशिरोमणि महाराज कहाँ हैं?
अमर आत्मा यही सिखाया,
निश्चित यहीं कहीं तो होंगे.
सदचर्या पालन करते जो,
उनके निकट पूज्य श्री होंगे.
कोटि नमन, वंदन स्वीकारो,
श्री चरणों में सतत हमारे.
जब तक मोक्षमहल न पाऊं,
पद चिन्हो पर चलें तुम्हारे.
कोटिश: नमोस्तु पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज

इंजिनियर अरुण कुमार जैन
ललितपुर, भोपाल, फरीदाबाद

एमवीआई ग्लोबल की महिला सदस्यों ने जरूरतमंद दो परिवारों की बेटियों की शादी में मदद की

अजय जैन. शाबाश इंडिया

अम्बाह। किसी भी जरूरतमंद परिवार की बिटिया की शादी कराना पुण्य का कार्य होता है। इसी पुण्य के कार्य को समय समय पर एमवीआई ग्लोबल की महिला सदस्यों द्वारा किया जाता है। इस बार इस संस्था द्वारा दो लड़कियों की शादी धूम धाम से कराने हेतु सहयोग किया है। संस्था की अध्यक्ष श्रीमती अनीता गुप्ता ने बताया कि हर मां बाप की इच्छा होती है कि उसकी बच्ची की शादी धूमधाम से हो लेकिन कुछ एक की आर्थिक परिस्थितिया ऐसी होती है कि वह इस सपने को पूरा नहीं कर पाते। ऐसे ही मां-बाप के साथ बच्चों के सपनों को पूरा करने के लिए हमारी संस्था जरूरतमंद परिवार की बेटियों की शादी में यथा संभव मदद करती है. उन्हें कपड़े से लेकर घरेलू सामान व कुछ नगदी भी दी जाती है। इस शादी समारोह में संस्था के प्रत्येक सदस्य के द्वारा आर्थिक सहयोग किया जाता है । आगे भविष्य में भी कन्याओं की शादी में यह सहयोग कार्यक्रम निरंतर जारी रहेगा। अध्यक्ष श्रीमती गुप्ता ने बताया कि संस्था द्वारा किये जा रहे इस सहयोग से लड़कियों के परिजन बेहद खुश है वहीं रविवार को दो बेटियों को परिजनों को महिला सदस्यों द्वारा सामग्री एवं नगद राशि उपलब्ध कराई गई एक परिजन ने कहा कि एक तरफ बेटी बड़ी हो रही थी और दूसरी तरफ हम आर्थिक तंगी से जूझ रहे थे। लेकिन अचानक इस संस्था के पदाधिकारीयो ने घर आकर के बेटी के विवाह में सहयोग की बात कही तो हमे हिम्मत मिली हम लोग संस्था के पदाधिकारियों के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं कि आगे इसी तरह यह जरूरतमंद कन्याओं की शादी करवाते रहें।